International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(I), January - March, 2022, pp.125-129

बून्दी क्षेत्र की प्रमुख बावड़ियाँ

डॉ. सुमित मेहता*

प्रस्तावना

भारत के प्राचीन ग्रन्थों में जल की महत्ता पर जोर दिया गया है। जल मानव जीवन के सभी पक्षों से जुडा हुआ है इसी कारण से विश्व की सभी प्राचीन सभ्यताओं का विकास नदियों की घाटियों में हुआ है। हाडौती कृषि प्रधान भूमि होने के कारण हमेशा से ही जल स्त्रोतों से समृद्ध रहा है। यहाँ के शासकों ने जन कल्याण को ध्यान में रखकर कुण्ड व बावड़ियों का निर्माण करवाया। बून्दी जिला अपनी कलात्मक बावड़ियों की वजह से बावड़ियों का नगर कहलाता है। बून्दी जिले की प्रमुख बावड़ियाँ इस प्रकार हैं:–

डूमरा बावड़ी

यह बावडी बून्दी जिले के नाहर के चौहटे चारभूजा मन्दिर के पीछे स्थित है। सन् 1178 ई. में बून्दी के पूर्व अधिपति जैता मीणा के दादा मीणा आबू ने इस बावडी का निर्माण करवाया। बावडी के पास ही अभयनाथ महादेव के मन्दिर का भी निर्माण करवाया गया। मीणा आबू द्वारा इसे अपने डूम (कबीला) को सौंपी जाने के कारण इस बावडी का नाम डूमरा बावडी पड़ा।(1) बावडी की गहराई, लम्बाई और चौड़ाई क्रमशः 46 फीट, 30 फीट और 26 फीट है। कुंड को जाने वाली 18 सीढियाँ है जो 10 फीट चौडी है।

बड़े तोपखाने के कोट की बावड़ी

राव सुरजन हाड़ा के काका पूरणमल के पौत्र मानसिंह के पुत्र हम्मीर सिंह ने 1583 ई. में इस बावडी का निर्माण करवाया था।(2) वास्तु के अनुसार बनी यह बावडी एल आकार की तथा पूर्वमुखी है। 75 सीढियों वाली इस बावडी की लम्बाई 70 फीट एवं चौडाई 14 फीट है। बावडी के निर्माण में छोटे पत्थर व चूना प्रयोग में लिया गया है।(3)

डहरी बावड़ी

राम बाग से सटी हुई यह बावडी रावले के मुख्य दरवाजे के बायीं तरफ तथा उत्तरमुखी है। इसका निर्माण सन् 1602 ई में राजा भोज की उपपत्नी रूपागर ने करवाया था। बावड़ी की लम्बाई 45 फीट, चौडाई 18 फीट एवं गहराई 60 फीट है। बावडी के प्रवेश द्वार पर विश्राम के लिए एक तिबारी बनी हुई है। बावडी के ढह जाने के कारण इसका पुनर्निमाण किया गया अतः इसका नाम डहरी (ढही) हुई बावड़ी पड़ा।

शुक्ल बावडी

सन् 1615 में राव राजा रतन सिंह के शासन काल में, शुक्ल रूद्र द्वारा बनवाये जाने के कारण, इसे शुक्ल बावडी कहा जाता है।(4) यह बावडी वाटर वर्क्स कार्यालय के पास स्थित है तथा एल आकार की है। बावडी की लम्बाई 60 फीट, चौडाई 15 फीट व गहराई 59 फीट है। बावडी में 28 सीढियाँ हैं। बावडी के उत्तर की तरफ शुक्लेश्वर महादेव का मन्दिर व गणेश जी की प्रतिमा स्थापित है।

चतरा धाबाई बावडी

राव राजा शत्रुसाल के भाई महासिंह जी के धाबाई चतरा के बेटे बीका ने 1644 ई. में इस बावडी का निर्माण करवाया(5) तथा अपने पिता के नाम पर इस बावडी का नाम रखा। बावडी पूर्वमुखी है तथा 46 सीढियों व 4 पाटों युक्त समलम्ब चतुर्भुज आकर में 55 फीट गहरी है।

[6] सहायक आचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान।

कालाजी देवपुरा की बावडी

बून्दी के देवपुरा गाँव में सड़क के किनारे यह बावडी स्थित है। इसका निर्माण राव अनिरूद्ध सिंह के धाभाई देवा पुत्र विजयराम गुर्जर ने राजधाय माँ श्रीमती जैसाबाई की स्मृति में करवाया। इस बावडी का निर्माण सन् 1683 ई में नरेश अनिरूद्ध सिंह के शासन काल में शुरू हुआ तथा राव राजा बुद्धसिंह के शासन काल में सन् 1695 ई. में निर्माण कार्य पूर्ण हुआ। बावड़ी 120 फुट लम्बी, 26 फुट चौडी और 94 फुट गहरी है।(6) बावडी पर 13 लाइनों का शिलालेख है जो अस्पष्ट है। वर्तमान में यह बावडी जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है।

पंडितजी की बावड़ी

बून्दी की इन्द्रगढ़ तहसील के अंधोरा गाँव में यह बावडी स्थित है। गाँव की कृषि भूमि को सिंचित करने के उद्येश्य से सन् 1723 ई. में पुरोहित जसदेव के पुत्र हरदेव ने इस बावडी का निर्माण करवाया।(7) इस बावडी की लम्बाई 50 फीट, चौडाई 15 फीट और गहराई 50 फीट है। बावडी उत्तराभिमुखी है तथा बावड़ी में कुल 50 सीढियाँ हैं। बावडी के दांयी तरफ एक कीर्ति स्तम्भ पर बावड़ी बनाने का लेख अंकित है। प्रवेश द्वार चौखटों युक्त है।

चाँदशाह की चौकी की बावड़ी

बूंदी से बाणगंगा के रास्ते में क्षारबाग के सामने यह बावडी स्थित है। सन् 1489 ई. में राव नारायणदास के शासन काल में चाँदशाह नाम के फकीर के लिए यह बावडी बनवाई गई।(8) बावड़ी 50 फीट लम्बी, 12 फीट चौडी तथा दक्षिणामुखी है।

सीलोर व्यास बावड़ी

यह बावड़ी सिलोर गाँव के दांयी तरफ स्थित है। सन् 1615 ई. में इणान्या व्यास सुखदेव जी के पुत्रों भगतीराम एवं हरीबख्श ने जनकल्याण की भावना से इसका निर्माण करवाया।(9) कुल 39 सीढ़ियों वाली पश्चिमाभिमुखी यह बावड़ी 60 फीट लम्बी, 20 फीट चौडी और 70 फीट गहरी है। पास ही एक शिखरबद्ध महादेव मंदिर स्थित है।

सीसोला पनघट की बावड़ी

पुरोहित नवलराम जी द्वारा सन् 1748 में सीसोला गाँव में यह बावडी बनवाई गई। बावड़ी पूर्वाभिमुखी, 40 सीढियों युक्त है तथा बावडी की लम्बाई, चौडाई व गहराई क्रमशः 60, 17 और 25 फीट है। इस बावडी से चड़स के द्वारा पेयजल व सिंचाई हेतु पानी निकाला जाता था। पश्चिमी दिशा में ढाणे पर बने रस्सियों के निशान इस बात को प्रमाणित करते हैं। महिलाओं के जल ले जाने के कारण इसे पनघट की बावडी नाम दिया गया।

व्यास बावड़ी

बूंदी के तिलक चौक में चारभुजा नाथ मंदिर की उत्तर दिशा में यह बावड़ी स्थित है। सन् 1682 ई. में दधिचि ब्राह्मण व्यास कमल नयन जी ने राव राजा अनिरूद्ध सिंह के शासन काल में इस बावड़ी का निर्माण करवाया।(10) बावड़ी 40 फीट लम्बी और 12 फीट चौडी है। बावडी में कुण्ड तक जाने वाली 23 सीढियाँ हैं।

भाटों की बावड़ी

बूंदी के इन्द्रगढ़ तहसील के गाँव लाखेरी गणेशपुरा में यह बावड़ी स्थित है। पुरोहित लीलापति तथा भाट नरहरदास ने सन् 1667 ई. में रावराजा श्री भाव सिंह जी के शासन काल में इस बावड़ी का निर्माण करवाया। बावड़ी 59 फीट लम्बी, 16 फीट चौडी तथा 59 फीट गहरी है। भाटों द्वारा जनकल्याण की भावना से इस बावड़ी का निर्माण करवाया गया।

डाक बंगला बावड़ी

राव राजा शत्रुसाल की आठवीं रानी श्रीमती चन्द्रकुमारी द्वारा सन् 1639 में इस बावडी का निर्माण करवाया गया। बाद में इस परिक्षेत्र में सन् 1903 में राव राजा रामसिंह के शासन काल में एक बाग बनवाया गया। उसके बाद यहाँ डाक बंगला तथा सर्किट हाउस का निर्माण कर इसकी सीमाओं का सौंदर्यीकरण किया गया।(11)

डाटुन्दा बावड़ी

बून्दी से सथूर मार्ग पर डाटुन्दा के बाहर हरराज हाड़ा की छतरी के पास यह बावड़ी स्थित है। रामलदेव के पुत्र नरबददेव की बहू बलंगा सोलंकनी ने इस बावड़ी का निर्माण करवाया।[12] बावड़ी 50 फीट लम्बी, 15 फीट चौडी और 45 फीट गहरी है। बडी घनाभाकार पत्थरों की शिलाओं द्वारा इसका निर्माण किया गया है। बावडी पूर्वाभिमुखी है और इसमें 29 सीढियाँ है।

खजूरी बावड़ी

बूंदी से 16 किमी दूर स्थित खजूरी गाँव से 3 किमी आगे प्राचीन मंदिर समूह के सामने यह बावडी स्थित है। धर्ममूर्ति रावल द्वारा सन् 1504 ई. में यह बावड़ी बनवाई गई।[13] 25 फीट लम्बी, 8 फीट चौडी, 20 फीट गहरी इस बावडी का निर्माण बडी घनाकार पाषाण शिलाओं से किया गया है। बावड़ी में कुल 15 सीढियाँ हैं।

बंगेश्वरी माता की बावड़ी

बूंदी से 10 किमी दूर बीजोलिया मार्ग पर बायीं तरफ यह बावड़ी स्थित है। बावड़ी के प्रवेश द्वार पर बंगेश्वरी माता का मंदिर स्थित है। बूंदी के संस्थापक देवसिंह के द्वारा इस बावडी का निर्माण करवाया गया तथा अपने पिता बंगदेव के नाम पर इसका नाम बंगेश्वरी माता की बावड़ी रखा। बावड़ी 45 फीट लम्बी, 12 फीट चौडी तथा 25 सीढियों युक्त है।

तालाब गाँव की बावड़ी

बून्दी जिले की हिड़ौली तहसील के तालाब गाँव में जोधसागर के किनारे यह बावड़ी स्थित है। बावड़ी के सामने, सड़क के दूसरी ओर, मंदिर स्थित है। सन् 1756 ई. में महाराव उम्मेदसिंह के शासन काल में, गुर्जर गौड़ ब्राह्मण बाई सुरूपा ने इस बावडी व मंदिर का निर्माण करवाया।[14] बावड़ी 45 फीट लम्बी, 15 फीट चौड़ी और 45 फीट गहरी है। बावडी दक्षिणामुखी है तथा चूने से पत्थरों की चिनाई करके बनाई गई है।

रामगंज बालाजी की बावड़ी

बूंदी–कोटा मार्ग पर, बूंदी से 5 किमी दूर, रामगंज बालाजी के मंदिर के सामने यह बावड़ी स्थित है। महाराव अनिरूद्ध सिंह की धाय माँ जसी बाई ने सन् 1682 ई. में इसका निर्माण करवाया। अनिरूद्ध सिंह ने इसे अपने वंशज सरदार सिंह को दान कर दिया था।[15] बावड़ी 60 फीट लम्बी, 15 फीट चौडी और 40 फीट गहरी है। बावड़ी में 25 सीढियाँ हैं।

खोड़ी की बावड़ी

यह बावड़ी बूंदी के मीरा दरवाजे के बांयी तरफ 50 मीटर की दूरी पर स्थित है। सन् 1792 ई. में, राव राजा विष्णु सिंह के शासन काल में, सनाढ्य ब्राह्मणी सुखाबाई ने इसका निर्माण करवाया।[16] सुखी बाई का एक पैर बाला की बीमारी से खराब हो गया था, इस कारण इसका नाम खोड़ी की बावड़ी पड़ा। बावड़ी में पत्थरों से बनी 63 सीढ़ियाँ हैं।

गणेश बाग की बावड़ी

देवपुरा गाँव के गणेश बाग में यह बावड़ी स्थित है। राव राजा अनिरूद्ध सिंह की रानी श्रीमती लाड़कंवर ने इसे बनवाकर अपनी खवास को संकल्प कर दिया था। बावडी की उत्तर–पूर्व दिशा में गणेश जी का एक मंदिर स्थित है जहाँ गणेश चतुर्थी पर मेला भरता है। बावड़ी में उत्तर व दक्षिण में 2 प्रवेशद्वार हैं जिससे इस बावड़ी का आकार अंग्रेजी के 'टी' ;ज्द्ध की तरह बना हुआ है। इसमें कुल 38 सीढ़ियाँ हैं।

हीराखाती की बावड़ी

हिण्डोली से आधा किमी दूर, बूंदी राष्ट्रीय राजमार्ग पर, शिखरबद्ध शिव मंदिर के सामने यह बावड़ी स्थित है। हीराखाती की बहू पार्वती ने सन् 1654 ई. में इसका निर्माण करवाया।[17] बावड़ी 40 फीट लम्बी और 14 फीट चौडी है।

शालिन्दी दर्रे की बावड़ी

लाखेरी से इन्द्रगढ़ जाने वाले शालिन्दी दर्रे मार्ग पर यह बावडी स्थित है। बावड़ी का निर्माण सूरज कंवर द्वारा सन् 1756 ई. में करवाया गया था।[18] कुल 51 सीढ़ियों वाली इस बावड़ी की लम्बाई 107 फीट, चौड़ाई 25 फीट और गहराई 50 फीट है। बावडी के निर्माण में पत्थरों की चूने से चिनाई की गई है। पास ही गणेश जी एवं बालाजी के मंदिर हैं।

इमलियों की बावड़ी

बूंदी से सथूर मार्ग पर डाटुन्दा गाँव में इमलियों के वृक्षों के पास यह बावड़ी स्थित है। माधों के पुत्र रामलदेव ने सन् 1570 ई. में इस बावड़ी का निर्माण करवाया था।[19] बावड़ी पूर्वाभिमुखी है तथा कलात्मकता लिये हुए है। यह 62 फीट लम्बी, 20 फीट चौडी और 50 फीट गहरी है।

शिवजी की बावड़ी

बूंदी की उत्तर–पश्चिम दिशा में 8 किमी दूर बोरखण्डी गाँव के दांयी तरफ यह बावड़ी स्थित है। सन् 1712 ई. में गुर्जर पिथा के पुत्र मोहन ने इसका निर्माण करवाया। 60 फीट लम्बी और 10 फीट चौड़ी इस बावड़ी में 40 सीढियाँ हैं तथा 8वीं सीढ़ी के बायीं तरफ दीवार पर एक शिलालेख अंकित है। बावड़ी की गहराई 60 फीट है।

खोजागेट की बावड़ी

बूंदी के खोजागेट में दांयी तरफ यह बावड़ी स्थित है। सन् 1644 ई. में राव राजा शत्रुसाल के शासन काल में सीलोर के छीपे खोजा पुरूषोत्तम पुत्र गणेश ने इसका निर्माण करवाया। इस क्षेत्र में खोजा गौत्र के छीपे रहा करते थे। इसलिए यहाँ के गेट का नाम खोजागेट रखा गया। 1654 ई. में राव राजा शत्रुसाल ने इस बावडी की सुरक्षा के लिए परकोटे एवं दरवाजे बनवाए।[20] बावड़ी की लम्बाई 108 फीट एवं चौडाई 20 फीट है। बावड़ी के ऊपर दो मंजिला दरवाजे बने हैं इन दरवाजों के ऊपर 22 फीट लम्बा व 8 फीट चौड़ा घुमावदार छज्जे युक्त भवन है।

बिबनबा बावड़ी

बूंदी से 4 किमी दक्षिण–पूर्व दिशा में बिबनवा गाँव के पश्चिमी ओर यह बावड़ी स्थित है। बेगम बिबनबा ने सन् 1485 ई. में राव सुभाण्डदेव के शासनकाल में इस बावड़ी का निर्माण करवाया और बिबनबा नामक गाँव बसाया।[21] 40 सीढ़ियों वाली यह बावड़ी 74 फीट लम्बी, 18 फीट चौडी और 45 फीट गहरी है।

नौ चौकी की बावड़ी

यह बावडी सीसोला गाँव में स्थित है तथा इसका निर्माण पुरोहित भक्तिराम जी ने सन् 1736 ई. में करवाया था।[22] बावड़ी के आस–पास देवताओं की नौ चौकियां हैं, इसी कारण से इसका नाम नौ चौकी की बावड़ी पडा। बावड़ी 55 फीट लम्बी व 16 फीट चौड़ी है।

सोमाणियों की बावड़ी

राव राजा शत्रु शल्य जी के शासन काल में सोमाणी वंश के लीला नारायण ने इस बावड़ी का निर्माण बूंदी के धाबाई चौक में करवाया।[23] बावडी पश्चिमाभिमुखी तथा एल आकार की है। 92 फीट लम्बी और 14 फीट चौडी इस बावडी में 77 सीढ़ियाँ हैं।

धावड़ की बावड़ी

यह बावड़ी कुंवारती गाँव के रास्ते में स्थित है। गुर्जर गंगाराम ने सन् 1702 ई. में महाराव राजा बुद्धसिंह के शासनकाल में इसका निर्माण करवाया। बावड़ी में कुल 40 सीढ़ियाँ हैं तथा बावड़ी 48 फीट लम्बी, 20 फीट चौडी और 45 फीट गहरी है।

इनके अतिरिक्त सीलोर बालाजी की बावड़ी, गुप्ता ग्राम की बावड़ी, गेन्डोली बावड़ी, अमरनाथ महादेव की बावड़ी, धाबाइयों के नये गाँव की बावड़ी, चैनराय जी के कटले की बावड़ी, धौला देवरा की बावड़ी, महादेव जी महाराज की बावड़ी आदि बून्दी की अन्य प्रमुख बावड़िया हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जवाहर लाल माथुर – बूंदी के देवालयों का इतिहास, पृ. 37, 1898
2. दुर्गाप्रसाद माथुर – बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ. 244, चित्रगुप्त प्रकाशन, बून्दी, 2010
3. डॉ पूनम सिंह – बून्दी के जलस्त्रोत, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, पृ. 59, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2014
4. शुक्ल बावड़ी के पास स्थित शिलालेख
5. चतरा धाबाई की बावडी का लेख
6. स्टेपवेल्स ऑफ बूंदी, पृ. 8
7. पंडितजी की बावड़ी के कीर्ति स्तम्भ का लेख
8. जवाहर लाल माथुर – बूंदी के देवालयों का इतिहास, पृ. 39
9. सीलोर शिव मंदिर का शिलालेख
10. दुर्गाप्रसाद माथुर – बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ. 245
11. जवाहर लाल माथुर – बूंदी के देवालयों का इतिहास, पृ. 36
12. डाटुन्दा बावड़ी का स्तम्भ लेख
13. खजूरी बावड़ी का शिलालेख
14. तालाब गाँव के मंदिर का शिलालेख
15. जवाहर लाल माथुर – बूंदी के देवालयों का इतिहास, पृ. 49
16. खोड़ी की बावड़ी का शिलालेख
17. हीराखाती की बावड़ी का लेख
18. शालिन्दी दर्रे की बावड़ी का शिलालेख
19. इमलियों की बावड़ी का स्तम्भलेख
20. दुर्गाप्रसाद माथुर – बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास, पृ. 247
21. पंडित गंगासहाय – वंशप्रकाश, पृ. 52, श्री रंगनाथ मुद्रणालय, बून्दी, 1927
22. नौ चौकी की बावड़ी का शिलालेख
23. सोमाणियों की बावड़ी का शिलालेख

❖◆❖